अनुक्रमांक / Roll No.

परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक यहाँ लिखें।
Candidate should write his/her Roll No. here

कुल प्रश्नों की संख्या : 10
Total No. of Questions : 10

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 08
No. of Printed Page : 08

M-2020-PAPER

PAPER-5 (FLT)

26.11.2020

पूर्णांक : 200
Total Marks : 200

1. इस प्रश्न-पत्र में कुल 10 प्रश्न हैं।
2. प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित है।
3. प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जिसका चयन आपने आवेदन पत्र में किया है। किसी अन्य माध्यम में लिखे गये उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेगा। सभी 10 प्रश्न करना अनिवार्य है।
4. जहाँ शब्द सीमा दी गई है उसका अवश्य पालन करें।
5. प्रश्न पत्र के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार दें। एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जायें तथा उनके बीच अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जायें।

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो पंक्तियों में दें **[3 × 20 = 60 अंक]**

A. पश्चिमी हिन्दी से विकसित तीन बोलियाँ ?

B. अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित तीन भाषाएँ ?

C. हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के तीन प्रारंभिक लेखक ?

D. सूरदास जी की भाषा, लिपि व ग्रंथ ?

E. तालव्य ध्वनियाँ किसे कहते हैं उदाहरण सहित लिखिए ?

F. अनुसूची 8 में वर्णित किन्ही तीन भाषाओं के नाम लिखिए ?

G. अनुच्छेद 351 को लिखें ?

H. मातृभाषा की तीन विशेषताएँ लिखो ?

I. पल्लवन किसे कहते हैं ?

J. संक्षेपण की तीन विशेषताएँ लिखो ?

K. अनुवादक के तीन गुण ?

L. औपचारिक पत्र किसे कहते हैं ?

M. पृष्ठांकन को परिभाषित करें ?

N. अधिकरण कारक को सोदाहरण लिखें ?

O. संकर शब्द किसे कहते हैं, उदाहरण सहित लिखें ?

P. उपसर्ग किसे कहते हैं ?

Q. गुण व वृद्धि संधि में अंतर ?

R. समास को उदाहरण सहित लिखें ?

S. मित्रता में कौन-सी संज्ञा है ?

T. अनुतान किसे कहते हैं ?

2. निम्नलिखित गद्यावतरण का हिन्दी से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कीजिए [20 अंक]

अपेक्षाकृत अधिाक विस्तृत क्षेत्र में संदेश प्रसारण के प्रत्येक परवर्ती साधन ने किसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए इस प्रगतिशील संसार में जन्म लिया। भाषण देना आवश्यक हो गया जब विचार आदिकाल की आवश्यकता से आगे बढ़े होंगे और उससे भी अधिाक व्यापक अभिव्यक्ति की आवश्यकता हुई होगी, जो हाव-भाव से पूर्ण होती है। आलेखन का सामाजिक वर्ग, पुजारियों, नेताओं, चिन्तन और साहित्य के उषाकाल में विकास के साथ जन्म हुआ। मुद्रण कला पुनः जागरण के ज्ञान और विचारधाारा का एक माधयम बन गई। आधुनिक विश्व के जन्म का पूर्ण संकेत भी इसी में मिला। प्रसारण एवं विद्युत एवं संदेश प्रसारण विश्व की अत्यावश्यक माँग को पूरा करने के लिए हुआ। उसका विनाश हो जाता, यदि एक संगठन, जो इसके मानवीय एवं वित्तीय एकता को प्रकट करने की क्षमता रखता। विचार एवं सूचना के शीर्घ आदान-प्रदान की आवश्यकता, प्रत्येक राष्ट्र से परिचित होने के लिए उस देश के व्यक्तियों और उनकी आदतों को जानने की आवश्यकता।

अथवा

राजनैतिक और आर्थिक कारणों से जातियों की मर्यादाएँ घटी बढ़ी हैं। राजकीय शक्ति पा जाने के बाद छोटी समझी जाने वाली जाति भी उत्तम अत्रिय मान ली गई है। और आर्थिक उन्नति के साथ शूद्र का दर्जा बढ़कर वैश्य का दर्जा बन गया है। इनके उदाहरण बहुत हैं। वस्तुतः इन कारणों से जातियों की सामाजिक मर्यादा जितनी बढ़ी है, उतनी धाार्मिक आन्दोलनों के कारण एकदम नहीं। ऐसा लगता है कि भारतवर्ष की शतादिक जातियों को कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर करने का एक मात्र तरीका यह है कि उनकी राजनीतिक गरिमा और आर्थिक स्वाधाीन संचार होगा, उसी दिन वह वास्तव में मुक्त हो सकेगा। भगवान की सन्तान होने का उसका दावा पहले स्वीकार चुका है, परन्तु उस दावे का कोई विशेष लाभ नहीं हुआ।

3. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए [15 अंक]

We do, admit that there are many kinds of evils prevailing in the country today. Corruption, bribery and malpractices are rampant everywhere. And not only ordinary people but most responsible administrators are also involved in this dirty quagmire. It is essential to put an end to these evils. But we want to urge upon our students and youngmen that this can be done only through constructive activities and not through destructive ones. The fact is that as far as possible, students should not disturb their studies by involving themselves in the dirty game of politics etc. Learning and knowledge are the greatest assets of man. By losing them, he will get nothing but only kicks. Even then ifour students and youngmen have a desire to reform the nation, we are prepared to welcome them with great pleasure and pride.

Or

Curiosity is the natural tendency of man and the enjoyment of pleasure of his instinctive desire. Both these tendencies are innate and inborn even in a diehard materialist. If they are not sublimated satisfactory, they become a cause of disbelief in the man on the one hand and produce in him sense of fear, disappointment and depression on the other. This may be called an aberrant state of man generally speaking, the man of today is more unsatisfied, more excited and more distressed. This aberration causes many mental and organic diseases. If it is minutely observed, this aberration appears to be the root cause of nervous disorder of today. Both the diagnosis and treatment of this aberration are difficult. It is because of this that man's humanity has been over shadowed by the devilism in him and the irony of it is that the man, for his outward gratification, is engaged to change the very definition of moral and human values.

4. निम्नलिखित गद्यांश का एक-तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए तथा रेखांकित पंक्तियों का भाव पल्लवन अपने शब्दों में कीजिए। [15 अंक]

'रामचरितमानस' के उत्तरकांड में गरूड़ ने काकभुशुण्डि से सात प्रश्न पूछे हैं। वे प्रश्न मानवीय अस्तित्व के बुनियादी प्रश्न है और उनके उत्तर भी उतने ही अर्थवान। जितने संक्षिप्त प्रश्न उतने ही सारगर्भित उत्तर। जैसे तुलसी अपने जीवन भर के अनुभवों का निचोड़ दे रहे हों। गरूड़ का एक प्रश्न है- 'बड़ दुख कवन, कवन सुख भारी' अर्थात् सबसे बड़ा कवि ही लिख सकता था। वे कहते हैं- 'नाहि दरिद्र सम दुख जग माहीं, संत मिलन सम सुख जग नहीं' अर्थात् दारिद्रय के समान कोई दुख नहीं और संत मिलन के समान कोई सुख नहीं है। विचार करें कि यदि दरिद्र सबसे बड़ा दुख है तो उसका उल्टा अर्थात् आर्थिक सम्पन्नता को सबसे बड़ा सुख कहना चाहिए। मगर तुलसी ऐसा नहीं कहते है।

अथवा

प्रकृति अपने अनन्त रूपों में हमारे सामने आती है- कहीं मधुर, सुसज्जित या सुन्दर रूप में, कहीं रूखे, बेडौल या कर्कश रूप में, कहीं भव्य, विशाल या विचित्र रूप में, और कहीं उग्र, कराल या भयंकर रूप में। सच्चे कवि का हृदय उसके उन सब रूपों में लीन होता है। उसके अनुराग का कारण अपना खास सुख भोग नहीं, बल्कि चिर साहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना है। जो केवल फ्रुल्ल प्रसून प्रसाद के सौरभ संचार, मकरन्द लोलुप मधुकर के गुंजार, कोकिल कूजित निकुंज और शीतल सुखस्पर्श समीर की ही चर्चा किया करते हैं, वे विषयी या भोगलिप्सु हैं। इसी प्रकार जो केवल मुद्राभास हिम बिन्दु मण्डित मरकताभ शाकदलजाल, अत्यन्त विशाल गिरिशिखर से गिरते जल-प्रपात की गम्भीर गति से उठी हुई सीकर

निहारिका के बीच विविधा वर्ण स्फुरण की विशालता, भव्यता और विचित्रता में ही अपने हृदय के लिए कुछ पाते हैं, वे तमाशबीन हैं, सच्चे भावुक या सहृदय नहीं। प्रकृति को साधारण, असाधारण सब प्रकार के रूपों को रखने वाले वर्णन हमें वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति इत्यादि संस्कृत के प्राचीन कवियों में मिलते हैं। पिछले खेमें के कवियों ने मुद्रक रचना में तो अधिाकतर प्राक तिक वस्तओं का अलग-अलग उल्लेख केवल उद्दीपन की दष्टि से किया है। प्रबन्ध रचना में थोड़ा बहुत संक्षिप्त चित्रण किया है। वह प्रकृति की विशेष रूप विभूति को लेकर ही।

5. स्वयं को जिलाधिकारी, जबलपुर मानते हुए एक कार्यालय आदेश निर्गित करें जिसे रात 8 बजे के बाद बाजार खोलने की अनुमति न हो (कोविड संदर्भ) **[15 अंक]**

अथवा

परिपत्र व अनुस्मरण पत्र को प्रारूप सहित लिखें ?

6. कोई पाँच प्रश्न हल करें - **[3 × 5 = 15 अंक]**

A. अन्धे के हाथ बटेर लगना ?

B. कान पर जूँ न रेंगना।

C. औधी खोपड़ी का होना।

D. छाती पर साँप लोटना।

E. अटका बनिया देत उधार।

F. दाल गीली होना।

G. आ बैल मुझे मार।

7. किन्ही पाँच शब्दों के अंग्रेजी पारिभाषिक रूप लिखें - **[3 × 5 = 15 अंक]**

1. अभियोग 2. प्रतिभूति 3. पूर्वाग्रह 4. अध्यादेश 5. पदोन्नति
6. अन्तरिम 7. नियंत्रक 8. अधिनियम 9. न्यायपालिका 10. उपभोक्ता

निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में से किन्ही पाँच के हिन्दी पारिभाषिक रूप लिखें -

1. Executiv1e 2. Agent 3. Civil Disobidience 4. Cabinet Secretariat
5. Capital 6. Interference 7. Offence 8. Nationalisation
9. Valid 10. Corporation

8. कोई पाँच प्रश्न हल करें - [3 × 5 = 15 अंक]

A. सूरज + इन्द्र की संधि बनाओ ?

B. संधि का संधि-विच्छेद कर नाम बताओ ?

C. तापस और तपस का अर्थ ?

D. अम्ल का विलोम लिखें ?

E. कालकूट के तीन पर्यायवाची लिखें ?

F. भगोड़ा में प्रत्यय कौन-सा है ?

G. सन्मार्ग में उपसर्ग कौन-सा है ?

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए। [3 × 5 = 15 अंक]

मुद्रा का अपना कोई प्रयोग नहीं है। उसका लाभ तभी है जबकि उसके बदले में अन्य वस्तुएँ या सेवाएँ ली जा सकें। वस्तुओं और सेवाओं की मात्र के बढ़ने-घटने के साथ-साथ मुद्रा-प्रवाह में भी बढ़ाव या घटाव हो सकता है।

अत्यधिक मुद्रा में बहुत कम चीजें आएँ तो मुद्रास्फीति बढ़ती है। 'मुद्रास्फिति' का अर्थ हैं- वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि मुद्रास्फीति बढ़ने के समय सभी वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य बढ़ता है अपितु वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में वृद्धि कुछ इस प्रकार होती है कि उसका कुल मूल्य-स्तर बढ़ जाता है। मुद्रास्फीति तब होती है जब निश्चित समय-काल में मूल्य बढ़ते हैं और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। अनिवार्य वस्तुएँ एवं सेवाएँ जैसे खाद्य पदार्थ, दुग्ध सामग्री और तेलीय बीज, साबुन और डिटर्जेन्ट, कीटनाशक आदि मुद्रास्फीति से सर्वाधिक प्रभावित होती है।

मुद्रास्फीति की मूल जड़ किसी देश में वस्तुओं और सेवाओं की कुल माँग और देश के कुल उत्पाद के बीच उत्पन्न असंतुलन है। जब सरकारी खर्च आय से अधिाक हो जाते हैं तो सरकार देश के केन्द्रीय बैंकों से मुद्रा उधार लेती है। निजी क्षेत्र भी अपने कुल खर्चों के बढ़ने और स्त्रोत के कम होने पर बैंकों से राशि उधार लेता है। जब देश में आयात की अपेक्षा निर्यात में वृद्धि होती हैं तो बदले में देश विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। विदेश में भारतीय प्रवासी अपनी आय वापस भारत में भेजते हैं तो उससे भी मुद्रा-पूर्ति में बढ़ोत्तरी होती है। मुद्रा-पूर्ति में वृद्धि तब भी होती है जबकि 'निष्क्रिय राशि' 'सक्रिय राशि' में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरणत: यदि आपातकालीन स्थितियों के लिए संजोकर रखी गई निष्क्रिय राशि को मालिक अथवा उपभोक्ता कोई वस्तु अथवा सम्पत्ति क्रय करके प्रयोग में लाये।

जब मुद्रा की पूर्ति उपर्युक्त घटकों के कारण बढ़ जाती है तो लोगों को वस्तुओं और सेवाओं की माँग पूरी करने के लिए पर्याप्त मुद्रा-राशि की आवश्यकता होती है। परन्तु ऐसी स्थिति में उत्पादन नहीं बढ़ता क्योंकि उत्पादन में प्रयुक्त सभी घटक जैसे मानव-संसाधन, प्रौद्योगिकी आदि पहले से ही पूर्ण रूप से माँग को पूरा करने के लिए रोजगार में लगे होते हैं। मशीनरी, पूँजी और प्रौद्योगिकी की कमी, विद्युत की कमी, परिवहन और कुशल मजदूरों की कमी के कारण भी उत्पादन नहीं बढ़ पाता। इसके परिणामस्वरूप अधिक माँग में होने वाली वस्तुओं और सेवाओं की माँग अधिक और पूर्ति कम होती है। इस प्रकार मुद्रास्फीति बढ़ती हैं।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए -

2. मुद्रा का लाभ कब उठाया जा सकता है ?

3. मुद्रास्फीति का क्या अर्थ है ?

4. मुद्रा पूर्ति में वृद्धि कब होती है ?

5. किस प्रकार का असंतुलन मुद्रास्फीति का कारण है ?

अथवा

''कोई भी कवि अपने युग की अवहेलना नहीं कर सकता। उसकी रचना में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की झलक आये बिना नहीं रहती। काव्यकार चाहे किसी भी युग का कथानक ले, परन्तु वह अपने युग की विचारधाराओं, मान्यताओं और धारणाओं से, पूर्णत: प्रभावित होता है। अत: उसके काव्य में उनका मुखरित हो उठना स्वाभाविक है। मैथिलीशरण गुप्त तो अपने युग के वैतालिक कहलाते हैं, इसलिए उनकी कृतियों में आधुनिक जन-जीवन की झलक मिलना नितान्त आवश्यक है। गुप्तजी प्रत्येक कृति में हम युग की प्रमुख-प्रमुख प्रवृत्तियों एवं मनोवृत्तियों का उल्लेख देख सकते हैं। ''भारत-भारती'' ही को लें, जिसने इन्हें राष्ट्रकवि बना दिया। गुप्तजी की प्रारम्भिक रचनाओं में हिन्दू राष्ट्रीयता के दर्शन होते हैं, किन्तु धीरे-धीरे वे भारतीय राष्ट्रीयता के समर्पण बन गए, जाति और धर्मगत भेद सब तिरोहित हो गये। भारत के निवासी. चाहे वे सिक्ख हों, चाहे इसाई, मुस्लिम हों, चाहे जैन, कोई हों, सब भारत माँ के लाल हैं और सब भाई-भाई हैं। इस तरह गुप्तजी संकुचित संकुचित राष्ट्रीयता के विशुद्ध राष्ट्र प्रेम की ओर बढ़े और उनका वही प्रेम मानव प्रेम में परिवर्तित हो गया। उनके काव्य में विश्व की मंगल कामना छिपी है। वे राष्ट्रीयता से मानवता के पुजारी बन गए।''

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

2. मैथिलीशरण गुप्त को 'युग के वैतालिक' क्यों कहा गया ?

3. लेखक के अनुसार कोई भी कवि अपने युग की अवहेलना नहीं कर सकता ?

4. गुप्त जी के काव्य में क्या सदभावना छिपी हुई हैं ?

5. किसी काव्यकार की रचना में उसके युग की किन-किन प्रवृत्तियों की झलक देखने को मिलती है ?

10. हाल ही में हुये किसी विश्व स्तरीय सम्मेलन पर प्रतिवेदन लिखिए - **[15 अंक]**

□□□□